ध्येयIAS®
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

12 December 2024

असम आंदोलन

सन्दर्भ: हाल ही में स्वाहिद दिवस (शहीद दिवस) के अवसर पर, केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने गुवाहाटी स्थित अपने आधिकारिक आवास पर असम आंदोलन के वीर शहीदों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

- इस भव्य समारोह में सोनोवाल ने असम की सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक अखंडता को बनाए रखने के संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति देने वाले लोगों को पुष्पांजलि अर्पित की।

असम आंदोलन का इतिहास:

- असम आंदोलन, जोकि 1979 में प्रारंभ होकर 1985 तक चला, बांग्लादेश से असम में बढ़ते अवैध प्रवास के प्रति गहरी चिंता और असम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के उद्देश्य से प्रेरित था। विशेष रूप से 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के पश्चात् बड़े पैमाने पर हुए प्रवासन ने स्वदेशी असमिया समुदाय में यह भय उत्पन्न कर दिया कि उनकी सांस्कृतिक पहचान, संसाधन और राजनीतिक अधिकारों को हानि पहुंचेगी।
- यह आंदोलन असमिया समाज में तीव्र सामाजिक और राजनीतिक अशांति का कारण बना। आंदोलन के दौरान हड़ताल, सविनय अवज्ञा आंदोलन और व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए, जिनका उद्देश्य अवैध प्रवासियों की पहचान कर उन्हें निर्वासित करना था।
- इस आंदोलन का नेतृत्व ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (AASU) ने किया, जिसने विशेष रूप से युवाओं के बीच स्वदेशी पहचान के संरक्षण हेतु जागरूकता और संघर्ष को संगठित किया। यह आंदोलन मुख्यत: बांग्लादेशी प्रवासियों, विशेष रूप से बंगाली मुसलमानों और अन्य समूहों के खिलाफ था।
- आंदोलनकारियों ने मतदाता सूची के पुनरीक्षण और अवैध प्रवासियों को हटाने की मांग की। आंदोलन ने हिंसा, सामाजिक अस्थिरता और प्रशासनिक पंगुता की स्थिति को जन्म दिया। अनेक वर्षों तक चले इस संघर्ष में कई आंदोलनकारी हताहत हुए, बड़ी संख्या में घायल हुए और लोगों ने कठिन परिस्थितियों का सामना किया, जिनमें युवा वर्ग प्रमुख था। आंदोलनकारियों को राज्य प्रशासन और सुरक्षा बलों के कठोर दमन का सामना करना पड़ा।
- इस ऐतिहासिक आंदोलन के दौरान AASU ने असम की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और स्वदेशी असमिया पहचान के संरक्षण की पुरजोर वकालत की। यह आंदोलन न केवल स्वदेशी समुदाय की अस्मिता की रक्षा के लिए एक निर्णायक मोड़ था, बल्कि असमिया समाज की राजनीतिक और सामाजिक चेतना को भी गहराई से प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

समझौता:

- 1985 में भारत सरकार और AASU के बीच असम समझौते पर हस्ताक्षर के साथ आंदोलन का समापन हुआ। इस समझौते के तहत सरकार ने 1971 के बाद असम में प्रवेश करने वाले अवैध प्रवासियों की पहचान करने और उन्हें निर्वासित करने की प्रतिबद्धता जताई, जो बांग्लादेश की स्वतंत्रता का वर्ष था।

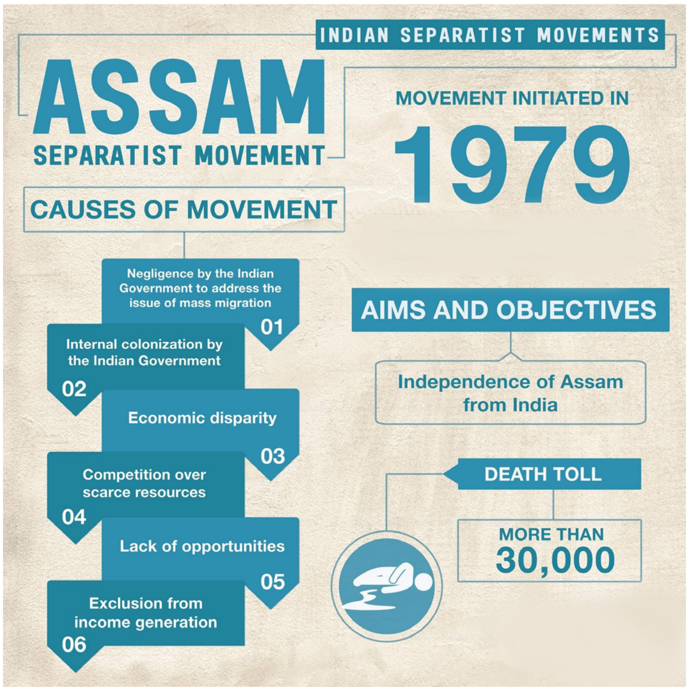

- समझौते में असमिया भाषा और क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा के लिए विशेष प्रावधानों को भी रेखांकित किया गया।
- हालांकि इस समझौते ने हिंसा और अशांति को समाप्त कर दिया, लेकिन अवैध आव्रजन का मुद्दा राज्य के लिए निरंतर बहस और चिंता का विषय बना रहा। फिर भी, इसने एक नए राजनीतिक चरण की शुरुआत को चिह्नित किया, जिसमें AASU असम गण परिषद (AGP) में रूपांतरित हो गया, जोकि एक राजनीतिक पार्टी के रूप में स्थापित हुई और बाद के वर्षों में असम में सरकार बनाने में सफल रही।

आईएनएस तुषिल

सन्दर्भ: हाल ही में भारत के नवीनतम स्टील्थ मिसाइल फ्रिगेट आईएनएस तुषिल को रूस के कलिनिनग्राद स्थित यंतर शिपयार्ड से भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। यह घटना भारत और रूस के बीच मजबूत होते रक्षा सहयोग की प्रतीक है।

आईएनएस तुषिल के बारे में:

- आईएनएस तुषिल एक बहु-भूमिका वाला स्टेल्थ गाइडेड मिसाइल

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR: 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR: 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

फ्रिगेट है, जिसे विभिन्न प्रकार के नौसैनिक अभियानों जैसे सतह-रोधी, वायु-रोधी और पनडुब्बी-रोधी युद्ध के लिए डिजाइन किया गया है।

- यह क्रिवाक III श्रेणी (प्रोजेक्ट 1135.6) का हिस्सा है, जोकि उन्नत क्षमताओं वाले फ्रिगेटों की एक उन्नत श्रृंखला है।

स्थान:

- यह क्रिवाक III श्रेणी (प्रोजेक्ट 1135.6) का हिस्सा है, जोकि उन्नत क्षमताओं वाले फ्रिगेट की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला है। यह तलवार श्रेणी और टेग श्रेणी के जहाजों के बाद क्रिवाक III श्रृंखला का सातवां जहाज है।

विकास और निर्माण:

- रूस के कलिनिन्ग्राद स्थित यंतर शिपयार्ड में निर्मित।
- इसके निर्माण के लिए भारतीय नौसेना, जेएससी रोसोबोरोनएक्सपोर्ट और भारत सरकार के बीच अक्टूबर 2016 में अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे। युद्धपोत निरीक्षण दल के भारतीय विशेषज्ञों की एक टीम ने निर्माण प्रक्रिया पर बारीकी से नजर रखी।
- फैक्ट्री समुद्री परीक्षण, राज्य समिति परीक्षण और डिलीवरी स्वीकृति परीक्षण सहित व्यापक परीक्षण 2024 में सफलतापूर्वक आयोजित किए गए।

क्षमता:

- यह जहाज 30 नॉट से अधिक की गति प्राप्त कर सकता है, जो समुद्री अभियानों में उत्कृष्ट चपलता प्रदान करता है। इसमें स्टेल्थ डिजाइन है, तथा इसमें उन्नत रडार-अवशोषित विशेषताएं शामिल हैं, जिससे दुश्मन के सेंसरों द्वारा इसकी पहचान कम हो जाती है।
- आईएनएस तुषिल निर्देशित मिसाइलों, उन्नत हथियार प्रणालियों और रडारों से सुसज्जित है, जिससे इसकी युद्ध में प्रभावशीलता बढ़ जाती है।
- इसकी लड़ाकू क्षमताएं सतह-रोधी और वायु-रोधी युद्ध पर केंद्रित हैं, जिससे यह समुद्री हितों की रक्षा करने में बहुआयामी है।
- जहाज में एक हेलीकॉप्टर डेक है, जिससे नौसेना के हेलीकॉप्टरों के साथ समन्वित हवाई संचालन संभव होता है।

जहाज का महत्व:

- आईएनएस तुशील हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में भारत की नौसैनिक क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है, जिससे समुद्री सुरक्षा बनाए रखने की भारत की क्षमता में वृद्धि होती है।
- यह भारत के चल रहे बेड़े के आधुनिकीकरण प्रयासों का हिस्सा है, जोकि देश की नौसैनिक शक्ति में सुधार के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करता है।
- यह जहाज भारत-रूस रक्षा संबंधों को मजबूत करता है तथा दोनों देशों के बीच निरंतर रणनीतिक साझेदारी को दर्शाता है।
- आईएनएस तुषिल समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय रक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगा , विशेष रूप से विवादित जल क्षेत्रों में, जहां भारत प्रमुख समुद्री मार्गों और क्षेत्रीय हितों की सुरक्षा करना चाहता है।

रियाद में संयुक्त राष्ट्र वार्ता

सन्दर्भः हाल ही में सऊदी अरब के रियाद में संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम सम्मेलन (UNCCD COP16) के पक्षकारों का 16वां सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें सूखे और मरुस्थलीकरण की पर्यावरणीय चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

- शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत एक प्रमुख रिपोर्ट में वैश्विक स्तर पर पारिस्थितिकी तंत्र पर मानव-प्रेरित जलवायु परिवर्तन, जल की कमी और वनों की कटाई के गंभीर प्रभाव को रेखांकित किया गया।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्षः

- **वैश्विक जल संकटः** रिपोर्ट में जल संकट की तीव्रता पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें गर्मी से होने वाले वाष्पीकरण से जल संकट और भी बदतर हो रहा है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र पर असर पड़ता है और मनुष्यों और जानवरों के लिए पर्याप्त पानी तक पहुँच पाना मुश्किल हो जाता है।
- **कृषि प्रभावः** सूखे और भूमि क्षरण से फसल की पैदावार और चरागाह भूमि में कमी आने से खाद्य सुरक्षा को खतरा है। इससे भूख और कुपोषण बढ़ता है।
- **प्रवासन और आर्थिक चुनौतियाँः** रिपोर्ट में कहा गया है कि रेगिस्तानी क्षेत्र में वृद्धि और सूखा प्रवासन को बढ़ावा दे रहे हैं, विशेष तौर पर दक्षिणी यूरोप, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्सों में। अनियमित वर्षा और भूमि क्षरण के कारण इन क्षेत्रों में आर्थिक अस्थिरता का सामना करना पड़ रहा है।
- **भविष्य के अनुमानः** यदि वर्तमान जलवायु प्रवृत्ति जारी रही, तो सदी के अंत तक लगभग पांच अरब लोग सूखे से प्रभावित हो सकते हैं, जिससे प्रभावित व्यक्तियों की वर्तमान संख्या में काफी वृद्धि हो सकती है।

यूएनसीसीडी की भूमिकाः

- यूएनसीसीडी का उद्देश्य स्थायी भूमि प्रथाओं और भूमि बहाली प्रयासों

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

के माध्यम से मरुस्थलीकरण को कम करना है। यह गंभीर सूखे से पीड़ित क्षेत्रों, विशेष रूप से अफ्रीका में, पर ध्यान केंद्रित करता है और सतत विकास के लिए दीर्घकालिक रणनीतियों को बढ़ावा देता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया:

- रियाद शिखर सम्मेलन में सऊदी अरब ने 2.15 बिलियन डॉलर देने का वादा किया, जबकि अरब समन्वय समूह ने 2030 तक मरुस्थलीकरण से लड़ने के लिए 10 बिलियन डॉलर देने का वादा किया।
- ये फंड कमजोर देशों को सूखे से निपटने की क्षमता बढ़ाने, जल प्रबंधन में सुधार करने और जलाशयों जैसे बुनियादी ढांचे का निर्माण करने में मदद करेंगे।

भूमि क्षरण को कम करने की रणनीतियाँ:

- **टिकाऊ भूमि उपयोग:** जल-कुशल सिंचाई और वनों की कटाई को कम करने जैसी प्रथाओं से भूमि क्षरण को कम किया जा सकता है।
- **पुनर्वनीकरण:** बड़े पैमाने पर पुनर्वनीकरण के प्रयास मिट्टी की नमी को बहाल कर सकते हैं, मरुस्थलीकरण को रोक सकते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- **पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ:** सूखे और भूमि क्षरण के लिए निगरानी प्रणालियों को मजबूत करने से समुदायों को बेहतर तैयारी और प्रतिक्रिया करने में मदद मिल सकती है।

चुनौतियाँ:

- आलोचकों का तर्क है कि शिखर सम्मेलन जलवायु परिवर्तन के मूल कारणों को संबोधित करने में विफल रहा। मेजबान देश सऊदी अरब को जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता को कम करने में विफल रहने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा, जोकि जलवायु संकटों को और बढ़ाता है।
- कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता स्पष्ट है और रिपोर्ट में पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और भूमि क्षरण से निपटने के लिए और व्यापक उपायों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

यूएनसीसीडी के बारे में:

- 1996 में लागू हुआ UNCCD, मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए एकमात्र कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय ढांचा है। यह 197 दलों के साथ सतत विकास पर केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और राष्ट्रीय कार्रवाई कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करता है, जिससे यह लगभग सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य है।

भारत कौशल रिपोर्ट 2025

सन्दर्भ: हाल ही में जारी इंडिया स्किल्स रिपोर्ट 2025 के अनुसार, भारतीय स्नातकों की रोजगार क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जोकि पिछले वर्ष के 51.25% से बढ़कर 54.81% हो गई है। यह वृद्धि भारत की कौशल विकास रणनीतियों और उच्च शिक्षा तंत्र की प्रभावशीलता को रेखांकित करती है, जोकि वैश्विक कार्यबल की मांगों के अनुरूप युवाओं को सशक्त बना रही हैं।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

- **बेहतर रोजगार क्षमता:** भारतीय स्नातकों की रोजगार क्षमता में पिछले दशक के दौरान 17% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। 2014 में यह दर 33% थी, जोकि 2025 में 50% से अधिक हो गई है। यह आंकड़ा भारत की उस प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, जोकि वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धी और सक्षम कार्यबल के निर्माण की दिशा में केंद्रित है।
- **वैश्विक प्रतिभा गतिशीलता:** व्हीबॉक्स के सीईओ निर्मल सिंह ने भारत की कुशल प्रतिभा आपूर्ति क्षमता के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह क्षमता भारत को वैश्विक प्रतिभा गतिशीलता में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। उन्होंने कौशल प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया, जिससे अंतरराष्ट्रीय नौकरी बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त और मजबूत हो सके।
- **प्रमाणित कौशल कार्यक्रम:** दीर्घकालिक, प्रमाणित कौशल कार्यक्रम, विशेष रूप से जो भाषा प्रशिक्षण को एकीकृत करते हैं, रोजगार क्षमता को सुधारने और युवाओं के लिए शीघ्र रोजगार के अवसर सृजित करने में अहम भूमिका निभाएंगे।
- **डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि:** यह रिपोर्ट 2024 ग्लोबल एम्प्लॉयबिलिटी टेस्ट के 6.5 लाख से अधिक प्रतिभागियों और 15 उद्योग क्षेत्रों के 1,000 से अधिक कॉरपोरेट्स से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित है।

रोजगार क्षमता वृद्धि को प्रेरित करने वाले कारक:

- **उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), क्लाउड कंप्यूटिंग और ऑटोमेशन का उदय नौकरी की भूमिकाओं को नया रूप दे रहा है और रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहा है। जैसे-जैसे व्यवसाय इन तकनीकों को एकीकृत कर रहे हैं, कुशल पेशेवरों की

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

मांग बढ़ रही है।

- **डिजिटल गतिशीलता (Digital Mobility) और हाइब्रिड कार्य:** रिपोर्ट में बताया गया है कि कैसे डिजिटल गतिशीलता और हाइब्रिड कार्य मॉडल ने भारतीय प्रतिभाओं को वैश्विक स्तर पर काम करने में सक्षम बनाया है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कुशल पेशेवरों के लिए रोजगार के अवसरों का विस्तार हुआ है।

आर्थिक क्षमता:

- **वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान:** डिजिटल गतिशीलता में वृद्धि और भारत की बढ़ती वैश्विक भागीदारी, 2030 तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में 500 बिलियन डॉलर का योगदान कर सकती है, जिसमे भारत इस विकास के केंद्र में रहेगा।
- **क्षेत्र-विशिष्ट मांग:** रिपोर्ट विभिन्न उद्योगों में बढ़ती मांग पर भी प्रकाश डालती है:
  - » **निर्माण क्षेत्र:** $2.5 ट्रिलियन के निर्माण उद्योग को इंजीनियरों और योजनाकारों की आवश्यकता है।
  - » **वित्तीय क्षेत्र:** 2030 तक फिनटेक और ग्रीन फाइनेंस के लिए 4 लाख पेशेवरों की मांग होगी।

रिपोर्ट के बारे में:

- भारत कौशल रिपोर्ट 2025, प्रतिभा मूल्यांकन एजेंसी व्हीबॉक्स द्वारा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई), भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) के सहयोग से प्रकाशित की गई है।

पॉवर पैक्ड न्यूज़

MuleHunter.AI

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य अवैध वित्तीय गतिविधियों में शामिल म्यूल बैंक खातों का पता लगाने और उन्हें चिन्हित करने के लिए MuleHunter.AI लॉन्च किया है, जो एक उन्नत एआई टूल है।
- भारत में साइबर अपराध के बढ़ते मामलों (67.8%) के कारण भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा यह पहल शुरू की गई है। MuleHunter.AI, उन्नत मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके म्यूल खातों की पहचान प्रक्रिया को तेज और सटीक बनाता है, पारंपरिक नियम-आधारित सिस्टम की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करता है।

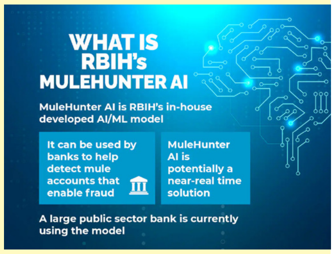

- म्यूल खाते ऐसे बैंक खाते होते हैं, जिन्हें अपराधी अवैध धन के लेन-देन के लिए उपयोग करते हैं। ये खाते अक्सर कम आय वर्ग के लोगों या सीमित तकनीकी ज्ञान वाले व्यक्तियों के नाम पर होते हैं।
- इन्हें धोखे या दबाव में अवैध धन शोधन की गतिविधि में शामिल किया जाता है। आपस में जुड़े होने से इन खातों का पता लगाना मुश्किल हो जाता है, जिससे वित्तीय धोखाधड़ी और साइबर अपराध का खतरा बढ़ता है।
- इस टूल को वित्तीय संस्थानों के सहयोग से विकसित किया गया है। पारंपरिक प्रणाली में फाल्स पॉजिटिव की अधिक दर और धीमी प्रक्रिया के कारण कई म्यूल खाते छूट जाते थे। RBIH ने म्यूल खातों से जुड़े 19 विशिष्ट व्यवहारों का विश्लेषण करके यह एआई समाधान तैयार किया है।

वरिष्ठ पारिस्थितिकीविद् माधव गाडगिल 2024 यूएनईपी 'चैंपियन ऑफ द अर्थ' पुरस्कार से सम्मानित

- हाल ही में प्रतिष्ठित पारिस्थितिकीविद् माधव गाडगिल को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के 2024 'चैंपियंस ऑफ द अर्थ' पुरस्कार के छह प्राप्तकर्ताओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई है। 'लाइफटाइम अचीवमेंट' श्रेणी में सम्मानित गाडगिल के अभूतपूर्व कार्य ने भारत और उसके बाहर पर्यावरण संरक्षण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

- छह दशकों के वैज्ञानिक करियर के साथ, गाडगिल को जमीनी स्तर पर पर्यावरण और अनुसंधान में उनके योगदान के लिए जाना जाता है।
- उन्होंने 2011 में पश्चिमी घाट पारिस्थितिकी विशेषज्ञ पैनल की अध्यक्षता की, जिसमें उन्होंने पारिस्थितिकी दृष्टि से संवेदनशील पश्चिमी घाट के 75% हिस्से के संरक्षण की वकालत की, जोकि जैव विविधता का हॉटस्पॉट है। विवादों और कार्यान्वयन में देरी के बावजूद, उनकी सिफारिशें पर्यावरण नीति निर्माण में

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

एक बेंचमार्क बनी हुई हैं।

- गाडगिल की प्रभावशाली 'गाडगिल रिपोर्ट' ने औद्योगिक और जलवायु खतरों के बीच नाजुक पश्चिमी घाटों के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उनके प्रयासों ने समुदाय-संचालित संरक्षण को प्रेरित किया है और सतत विकास पर जनता की राय को आकार दिया है।
- गाडगिल ने आशा व्यक्त करते हुए पर्यावरण संबंधी मुद्दों को आगे बढ़ाने में सामूहिक कार्रवाई और संचार की शक्ति पर जोर दिया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके सतत समर्पण और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए उनकी वकालत के लिए यूएनईपी ने उन्हें 'लोगों का वैज्ञानिक' कहा।

भारतीय फिल्म निर्माता पायल कपाड़िया को गोल्डन ग्लोब अवाड्र्स में ऐतिहासिक सम्मान मिला

- हाल ही में भारतीय फिल्म निर्माता पायल कपाड़िया ने अपनी फिल्म ऑल वी इमेजिन एज लाइट के लिए 82वें गोल्डन ग्लोब अवाड्र्स में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक-मोशन पिक्चर के लिए नामांकन प्राप्त करके एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है।
- यह 26 वर्षों में पहली बार है जब शेखर सुमन के बाद किसी भारतीय फिल्म निर्माता को इस प्रतिष्ठित श्रेणी में मान्यता मिली है।

- ऑल वी इमेजिन ऐज लाइट एक अंतर्राष्ट्रीय सह-निर्माण फिल्म है, जिसमें फ्रांस, भारत, नीदरलैंड, लक्जमबर्ग और इटली ने भागीदारी की है। इस फिल्म को इस साल की शुरुआत में 77वें कान फिल्म फेस्टिवल में ग्रैंड प्रिक्स जीतने के बाद वैश्विक पहचान मिली।
- एमिलिया पेरेज (फ्रांस) और द गर्ल विद द नीडल (पोलैंड) जैसी प्रमुख वैश्विक प्रविष्टियों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, इस मान्यता ने भारतीय सिनेमा के बढ़ते वैश्विक प्रभाव को और मजबूत किया है।

गोल्डन ग्लोब के बारे में:

- हॉलीवुड फॉरेन प्रेस एसोसिएशन (HFPA) द्वारा प्रस्तुत गोल्डन ग्लोब पुरस्कार मनोरंजन उद्योग में सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक है, जोकि फिल्म और टेलीविजन की विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्टता को मान्यता देता है। 1944 में स्थापित, इन पुरस्कारों को ऑस्कर का अग्रदूत माना जाता है, क्योंकि ये सिनेमा में महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हैं और पुरस्कार सत्र के रुझान को आकार देते हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com